

नयी कविता में आक्रोश और विडंबना की सौन्दर्यात्मक अभिव्यक्ति: श्रीकांत वर्मा के काव्य के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. पूनम पाण्डेय

सहा.आचार्य, हिंदी विभाग

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, म. प्र.

Received– 26 September - 2026

Accepted– 28 September - 2026

Published– 30 September-2026

Corresponding Author-

डॉ. पूनम पाण्डेय

सहा.आचार्य, हिंदी विभाग

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, म. प्र.

DOI- <https://doi.org/10.67275/SU.2026.041516>

Funding Policy-

‘Shodh Utkarsh’ is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.

वित्त पोषण नीति-

‘शोध उत्कर्ष’ एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।

Copyright Notice -

© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).

कापीराइट सूचना-

© 2026 लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।



सारांश- हिंदी की नई कविता आधुनिक भारतीय जीवन की जटिल सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और अस्तित्वगत परिस्थितियों से निर्मित एक महत्वपूर्ण काव्यधारा है। बीसवीं शताब्दी के मध्य में बदलते सामाजिक यथार्थ, युद्ध-बोध, औद्योगीकरण, नगरीकरण, राजनीतिक अस्थिरता, मूल्य-संकट और व्यक्ति के बढ़ते अकेलेपन ने कविता की संवेदना और अभिव्यक्ति को व्यापक रूप से प्रभावित किया। नई कविता ने परंपरागत भावुकता और सामूहिक आदर्शवाद से अलग व्यक्ति के निजी अनुभव, अंतर्द्वंद्व, विसंगति, असुरक्षा और अस्तित्वगत प्रश्नों को काव्य के केंद्र में स्थापित किया। इस प्रक्रिया में आक्रोश, विडंबना, व्यंग्य, प्रश्नाकुलता और प्रतिरोध इसकी प्रमुख अभिव्यक्तिगत विशेषताएँ बनकर उभरीं।

इसी संदर्भ में श्रीकांत वर्मा का काव्य नई कविता की आधुनिक चेतना का विशिष्ट प्रतिनिधित्व करता है। उनकी कविताओं में व्यक्ति और समाज, सत्ता और मनुष्य, इतिहास और वर्तमान तथा मिथक और यथार्थ के बीच विद्यमान तनाव का गहन एवं आलोचनात्मक उद्घाटन मिलता है। उनका आक्रोश प्रत्यक्ष राजनीतिक विरोध तक सीमित न रहकर सामाजिक पाखंड, नैतिक अवमूल्यन, आत्मिक क्षरण और ऐतिहासिक विसंगतियों के प्रति भी अभिव्यक्त होता है। विशेषतः ‘मगध’ में इतिहास के पुनर्पाठ के माध्यम से समकालीन सत्ता-संरचनाओं, राजनीतिक विडंबनाओं और मनुष्य की असुरक्षा को प्रतीकात्मक एवं व्यंजना-प्रधान भाषा में अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य नई कविता की संवेदनात्मक एवं सौंदर्यात्मक संरचना के संदर्भ में श्रीकांत वर्मा के काव्य में निहित आक्रोश और विडंबना-बोध का विश्लेषण करना तथा उसके ऐतिहासिक, राजनीतिक और अस्तित्ववादी आयामों को रेखांकित करना है।

बीज शब्द: आधुनिकता, सत्ता, इतिहास, राजनीतिक- विडंबना, मध्यवर्गीय, आक्रोश।

शोध का उद्देश्य इस अध्ययन का उद्देश्य नयी कविता में आक्रोश और विडंबना के सौन्दर्यात्मक स्वरूप का विश्लेषण करना है। विशेषतः श्रीकांत वर्मा के काव्य में सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय विसंगतियों के चित्रण, आक्रोश की अभिव्यक्ति, विडंबनात्मक दृष्टि तथा इनके कलात्मक संयोजन का अध्ययन

करते हुए उनकी काव्य-दृष्टि और शिल्पगत विशेषताओं को स्पष्ट करना है।

परिचय:- 20वीं शताब्दी के मध्य में हिंदी कविता के समक्ष सबसे बड़ा प्रश्न था- परिवर्तनशील समय में मनुष्य के आंतरिक और बाह्य संघर्षों को किस प्रकार अभिव्यक्त किया जाए। इस समय तक छायावाद का रूमानी तत्व क्षीण हो चुका था और प्रगतिवाद की प्रासंगिकता केवल सामाजिक यथार्थ तक सिमट गई थी। इसी वातावरण में उपजे नई कविता आंदोलन ने कविता को मनुष्य के निज अनुभव, अस्तित्वगत संकट, वास्तविक बोध और आधुनिक अस्मिता की ओर मोड़ दिया। नई कविता की सार्थकता और महत्व को उजागर करते हुए भारत भूषण अग्रवाल लिखते हैं, "मैं निवेदन करना चाहूंगा की स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता की सबसे बड़ी उपलब्धि नई कविता है अर्थात् वह प्रचुर काव्य राशि जिसे मोटे तौर पर नई कविता कहते हैं। निश्चय ही इसका बीजारोपण स्वतंत्रता के पूर्व हो चुका था पर उसका सम्यक प्रस्फुटन और प्रतिफलन युग की सबसे बड़ी घटना है।" ¹ दरअसल, नई कविता की सबसे बड़ी विशेषता है आसपास की वस्तुओं में कविता की तलाश। यह विशेषता श्रीकांत की कविताओं में बड़ी सहजता और बारीकी से समाई हुई है। इसीलिए उनकी कविता कविताओं की भीड़ में आसानी से पहचानी जाती है। तनाव, द्वंद्व, व्यंग्य आदि भी आसपास बिखरे काव्य तत्वों में समाहित रहते हैं। कवि अपनी बौद्धिक कुशलता से उनका यथानुसार इस्तेमाल करता रहता है। इस संदर्भ में नामवर सिंह लिखते हैं, "नई कविता यदि आज द्वंद्व और तनाव को काव्य के प्रतिमान के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहती है तो वह हिंदी आलोचना की गौरवशाली परंपरा को ही आगे बढ़ा रही है। ऐतिहासिक संदर्भ को देखते हुए भी कविता में आज द्वंद्व और संघर्ष के मूल्य पर जोर देना अप्रासंगिक नहीं है।" ²

नई कविता का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश श्रीकांत वर्मा के कवि-व्यक्तित्व और उनकी रचनात्मक चेतना के साथ गहरे स्तर पर साम्य स्थापित करता है। पत्रकारिता, राजनीति तथा सांस्कृतिक विमर्श से उनके व्यापक जुड़ाव ने उन्हें अपने समय के सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय रूपांतरणों को निकटता से देखने और अनुभव करने का अवसर प्रदान किया। परिणामतः उनकी कविता आधुनिकता के अंतर्विरोधों, मूल्य-संकटों और मनुष्य की अस्तित्वगत बेचैनी को विशिष्ट संवेदनात्मक एवं वैचारिक तीव्रता के साथ अभिव्यक्त करती है। नई कविता के प्रमुख रचनाकारों के संदर्भ में श्रीकांत वर्मा का काव्य नई कविता की बौद्धिक और वैचारिक संरचना को विशिष्ट विस्तार प्रदान करता है। उनकी रचनात्मक दृष्टि में भारतीय इतिहास, समकालीन राजनीति, सत्ता-संबंध और मनुष्य के संघर्ष परस्पर अंतर्संबद्ध दिखाई देते हैं। उनके काव्य में सत्ता की दमनकारी प्रवृत्तियों, इतिहास की पुनरावृत्तियों, मानवीय चेतना के क्षरण, सामाजिक पाखंड तथा आधुनिक जीवन की विसंगतियों का आलोचनात्मक उद्घाटन मिलता है। श्रीकांत वर्मा की कविता भावुक आदर्शवाद के स्थान पर यथार्थ के निर्मम साक्षात्कार को प्राथमिकता देती है। उनका आक्रोश मात्र प्रतिक्रियात्मक क्रोध न होकर नैतिक और बौद्धिक चेतना से संपृक्त है, जबकि उनकी विडंबना केवल व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ के सूक्ष्म विश्लेषण का प्रभावी माध्यम बनती है। इस दृष्टि से उनका काव्य नई कविता में आलोचनात्मक आधुनिक चेतना का महत्वपूर्ण प्रतिपक्ष निर्मित करता है।

श्रीकांत वर्मा का काव्य संसार: पृष्ठभूमि और विकास:

श्रीकांत वर्मा ने जिस दौर में अपना लेखन कार्य प्रारंभ किया था उस समय देश के स्वतंत्र होने के बावजूद भी मानवीय मूल्यों के विघटन, महंगाई, चोर बाजारी कुव्यवस्था का नंगा नाच कमजोर होने का नाम ही नहीं ले रहा था। इन अव्यवस्थाओं के कारण युवा वर्ग असंतोष तथा अनास्था की भावना से आप्लावित हो आक्रोश से भर उठा। इसी आक्रोश की अभिव्यक्ति हमें श्रीकांत वर्मा की रचनाओं में प्रबलता से मिलती है। उनकी रचनाएं समाज की विसंगतियों, विद्रूपताओं, सर्वहारा वर्ग के शोषण को जिस रूप में उद्घाटित करती हैं वह अप्रतिम है। यद्यपि मुक्तिबोध की भांति वह घोषित मार्क्सवादी तो कभी नहीं रहे किंतु जागरूक होकर उन्होंने नई कविता की एकल वादी प्रवृत्तियों का जहां एक और प्रबल विरोध किया वहीं दूसरी तरफ कविता को वादों में बांधना अस्वीकार किया। साहित्य में तटस्थता के विरोध के साथ-साथ कविता सीधे-सीधे जनोन्मुखी होकर जन आकांक्षाओं का आधार स्तंभ बने यही उनकी कविताओं का अभीष्ट रहा।

भटका मेघ काव्य संग्रह की भूमिका लिखते हुए श्रीकांत वर्मा ने नई कविता के व्यक्तिवाद, क्षणवाद पर तीखी टिप्पणियां की थीं। निःसंदेह यहां वे अजेय के नई कविता के शास्त्र के प्रति विरोध का स्वर मुखरित कर रहे थे। वह प्रतिवाद करते हुए टिप्पणी करते हैं, "हर युग का प्रगतिशील साहित्य एक नए एवं जीवंत व्यक्तित्व स्थापित करता है। प्रश्न यही है कि आज की जीवंत कविता में कौन सा व्यक्तित्व उभर रहा है? आज के जीवंत मूल्य कौन से हैं? ये मूल्य अकेले एक व्यक्ति के हैं या संपूर्ण समाज के? राहों के अन्वेषण के लिए मशाल की जरूरत होती है। अंधकार के खंडहरों में भटक कर चमगादड़ के पंखों की फड़फड़ाहट को ही जीवन का एकमात्र चिन्ह मान लेना एक और बात है, पथ की खोज करना दूसरी बात"³

साहित्य, पत्रकारिता और राजनीति—इन तीनों क्षेत्रों में सक्रिय सहभागिता ने श्रीकांत वर्मा की काव्य-दृष्टि को व्यापक ऐतिहासिक चेतना तथा सामाजिक-राजनीतिक अनुभव प्रदान किया। उनकी कविता में इतिहास का पुनर्पाठ, सत्ता-संरचनाओं की

अंतर्निहित हिंसा, मनुष्य का अकेलापन, निराशा, मूल्य-संकट, भाषिक संक्षिप्तता तथा प्रतीकात्मकता का विशिष्ट समन्वय दिखाई देता है। नई कविता के परिप्रेक्ष्य में उनकी रचनात्मकता आधुनिक जीवन की जटिलताओं को प्रत्यक्ष राजनीतिक वक्तव्य के बजाय सांकेतिक, व्यंजना-प्रधान और अंतर्मुखी संरचना के माध्यम से अभिव्यक्त करती है। उनके काव्य में आक्रोश मुखर नारे के रूप में नहीं, बल्कि भाषा, बिंब, प्रतीक और संरचना के अंतःस्तरों में सक्रिय आलोचनात्मक चेतना के रूप में उपस्थित होता है। इसी प्रकार विडंबना उनके काव्य में मात्र व्यंग्यात्मक उपकरण न रहकर अर्थ-निर्माण की महत्वपूर्ण सौंदर्यात्मक शक्ति बन जाती है।

नई कविता के प्रमुख कवियों की रचनात्मक प्रवृत्तियों के संदर्भ में श्रीकांत वर्मा की विशिष्टता इस तथ्य में निहित है कि उन्होंने इतिहास और मिथक को समकालीन राजनीतिक एवं सामाजिक यथार्थ के विश्लेषण का माध्यम बनाया। जहाँ मुक्तिबोध की कविता आत्मसंघर्ष और सामाजिक अंतर्विरोधों की जटिलता को उद्घाटित करती है तथा धूमिल का काव्य राजनीतिक व्यवस्था के प्रति प्रत्यक्ष प्रतिरोध का स्वर निर्मित करता है, वहीं श्रीकांत वर्मा इतिहास की स्मृतियों और मिथकीय संकेतों के माध्यम से सत्ता, हिंसा और नैतिक विघटन की संरचनात्मक उपस्थिति को रेखांकित करते हैं। उनका प्रसिद्ध काव्य-संग्रह 'मगध' इस काव्य-दृष्टि का सशक्त उदाहरण है। यहाँ इतिहास अतीत का स्थिर दस्तावेज न होकर वर्तमान को समझने वाली सक्रिय चेतना के रूप में प्रयुक्त होता है। प्राचीन सत्ता-संरचनाओं और समकालीन राजनीतिक अनुभवों के अंतर्संबंध से 'मगध' एक बहुस्तरीय प्रतीक में रूपांतरित हो जाता है। इस प्रकार श्रीकांत वर्मा की कविता अपने समय की विसंगतियों, अमानवीय शक्तियों और नैतिक संकटों के प्रति प्रतिरोधी चेतना का निर्माण करती है। उनका काव्य आधुनिक मनुष्य और समाज का ऐसा आलोचनात्मक दर्पण है, जिसमें इतिहास, सत्ता और वर्तमान की अंतर्विरोधी वास्तविकताएँ एक-दूसरे में प्रतिबिंबित होती हैं।

"कई बार मैंने निश्चय किया/ जो होगा सो होगा

रह लूंगा और इस ख्याल पर

कई बार उससे/ उबा/ लेकिन प्रत्येक बार

वहीं लौट आया।"⁴

संभवतः इसीलिए साठोत्तरी हिंदी कविता के पहले नाराज कवि के रूप में उनकी प्रतिष्ठा ज्यादा है। 'भटका मेघ' से शुरू हुई उनकी काव्य यात्रा 'माया दर्पण', 'दिनारंभ', 'जलसाघर' से होते हुए एक ऐसे कवि का संसार है जहां 20वीं सदी के मनुष्य की अपने समय से सीधा साक्षात्कार है। नाराजगी, असहमति और विरोध का स्वर, समय और समाज की विसंगतियों का चित्रण, ऐतिहासिक बिंबों का प्रयोग और सरल एवं प्रभावशाली भाषा-शैली उनके काव्य की प्रमुख विशेषताएं हैं। उनकी कविताएं समय और समाज की विसंगतियों, विद्रूपताओं और राजनीतिक वैषम्य पर सीधा और कड़ा प्रहार करती हैं। उन्होंने राजनीतिक घोषणा-पत्रों से हटकर एक समानवेषी कवि के रूप में खुद को प्रस्तुत किया।

वस्तुतः श्रीकांत वर्मा नई कविता आंदोलन के अवसान के कवि हैं। उनकी कविता सन साठ की कविता का स्पष्ट विभाजन है। नई कविता के इतिहास का गहराई से सिंहावलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि उस दौर में अजेय युग की धूम मची हुई थी। इसके विपरीत श्रीकांत वर्मा की कविता का मुख्य सरोकार वह नहीं है जो अजेय और उनके अनुयायियों का अभीष्ट रहा। दरअसल, श्रीकांत वर्मा अजेय से अलग मुक्तिबोध के बहुत नजदीक थे और उनसे खासा प्रभावित थे। मुक्तिबोध ने नई कविता के भीतर छई रोमांस और जड़ीभूत सौंदर्याभिरुचि को काटकर नई कविता में जिस वस्तुवादी चेतना का विकास किया इसका प्रत्यक्ष प्रभाव साठोत्तरी कविता पर दृष्टिगत होता है।

श्रीकांत वर्मा ने अपने 'भटकाये' काव्य संग्रह के पश्चात 'माया दर्पण' और 'दिनारंभ' संग्रह की कविताओं में उसी सामाजिक यथार्थ और राजनीतिक माहौल से पैदा हुई अनास्था को एक सार्थक अभिव्यक्ति देने का भरपूर प्रयास किया। इस तरह उन्होंने अज्ञेय की घोर व्यक्तिवादी चेतना को खुली चुनौती दी और मुक्तिबोध की तरह एक विद्रोही कवि के रूप में पहचान बनाई।

आक्रोश और विडंबना का स्वरूप और प्रकृति:- श्रीकांत वर्मा के काव्य में आक्रोश मुख्यतः सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत विसंगतियों के प्रति उनकी गहरी असहमति और विद्रोह का परिणाम है। उनकी कविताएं प्रायः ही अन्याय, शोषण और भ्रष्टाचार के विरुद्ध तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करती हैं। उनकी कविताओं में अपने समय की सत्ता, संस्कृति और सभ्यता के अंतर्विरोधों का यथार्थ परक चित्रण मिलता है। उनका आक्रोश प्रत्यक्ष नहीं अपितु विमर्शात्मक और ऐतिहासिक बोध से युक्त है। वे तत्कालीन सामाजिक- राजनीतिक यथार्थ पर प्रत्यक्ष प्रहार करने के बजाए एक सांस्कृतिक पुनर्पीठ के माध्यम से सत्ता और नैतिकता के संकट को उद्घाटित करते हैं।

श्रीकांत वर्मा के काव्य संग्रह 'माया दर्पण' की कविता 'घर धाम' में कवि जीवन की भयावहता और अर्थहीनता से ऊबकर अपने घर लौट जाना चाहता है। अपनों के बीच। इस संग्रह की कविताएं नगरीय परिवेश से ओत-प्रोत हैं और जो आज के परिवेश की भयावहता, आतंक, अन्याय, अनीति, अत्याचार, शोषण एवं आज की राजनीतिक त्रासदी को चित्रित करती हैं। माया दर्पण और जलसाघर संग्रह की कविताएं जहां 20वीं सदी की मानवीय बर्बरता की साक्षी हैं वहीं समय के त्रासदपूर्ण घटनाओं के साथ-साथ मध्यवर्गीय परिवार के चाल-चरित्र पर भी गहन प्रकाश डालती हैं। इनमें व्यवस्था के प्रति गुस्सा, विद्रोह, क्षोभ, घृणा, अकुलाहट और छटपटाहट के भाव के साथ ही निर्ममता भी है। इन कविताओं में राजनीति, धर्म, नैतिकता, जनतंत्र, समाजवाद का उपहास उड़ाते हुए उन पर करारा व्यंग्य भी किया गया है-

**"चेचक और हैजे से/ मरती हैं बस्तियां
कैंसर से हस्तियां/वकील/रक्तचाप से
कोई नहीं/मरता/ अपने आप से"**⁵

माया दर्पण की अधिकांश कविताओं में महानगरीय तकनीकों के तकनीकी आतंक, नैतिक पतन, हत्या, षड्यंत्र, खण्डित जीवन मूल्य आदि का अत्यंत बेबाक चित्रण हुआ है। इस संग्रह की एक कविता में नेता वर्ग की तुलना वेश्या से करते हुए वे कहते हैं कि जिस तरह वेश्या हर दिन एक को छोड़कर दूसरे से अपना संबंध स्थापित कर लेती है उसी प्रकार नेता भी अपने स्वार्थ में आमजन की पीड़ा से बेसुध हो किसी भी क्षुद्र स्तर उतर जाने में कोई संकोच नहीं करते। नेताओं पर कड़ा प्रहार करते हुए वे कहते हैं -

"दर्पण और दर्पण लड़ रहे हैं / सड़क पर

x x x

क्या बागडोर दे दू/वेश्याओं के हाथोंमें।"⁶

श्रीकांत वर्मा के जलसाघर संग्रह की कविताओं में 20वीं शताब्दी के भयावह चित्र खींचे गए हैं। मंडराते हुए युद्ध की खौफनाक छाया में 'युद्ध और शांति' 'अन्याय और न्याय' 'बर्बरता और जिजीविषा' के द्वंद्व इस संग्रह में समाहित हैं। इस संग्रह की कविताओं में इतिहास के बर्बर विजेताओं का नामोल्लेख बारंबार हुआ है। 'युद्ध नायक' शीर्षक कविता का एक उदाहरण द्रष्टव्य है

"मोहनजोदड़ो से अब तक का/ सिलसिला है/

शांति याददाश्त के लिए /मोर पंख की तरह

किताबों के बीच रखी हुई है/ युद्ध दस्तक दे रहा है

पृथ्वी की एक-एक सड़क पर/ भाग रहा है/ मनुष्य

युद्ध पीछा कर रहा है।"⁷

श्रीकांत वर्मा सत्य से च्युत और मूल्यों से रहित राजनीति की

बेहद पैनी और व्यंग्यात्मक भाषा में खबर लेते हैं। समाज में व्याप्त महंगाई, चोर बाजारी और शोषक वर्ग की अमानवीय प्रवृत्ति के विरुद्ध कवि का मन चीत्कार कर उठता है-

"छीन झपट, दमन युद्ध, चूसकर/मारी गई जनता के।

रक्त को/ बबर देखो वह चला जा रहा है

उसे माद में छेंडो मत माद को/गले लगाता है

सड़ांध को इसी तरह चलता है,तंत्र चलता है

गूंगा करता है गवाह को।"⁸

श्रीकांत वर्मा की कविताओं में समय और समाज की विसंगतियों और विद्रूपताओं के प्रति गहरा क्षोभ प्रकट हुआ है। उनकी मगध शीर्षक काव्य संग्रह की कविता समय की कविता है, जिसमें एक विशेष अर्थ में परिप्रेक्ष्य संपन्नता है और जो त्रासद यथार्थ से परिपूर्ण है। इस संग्रह तक आते-आते उनकी उत्तेजना का स्वर धीमा पड़ जाता है और वह वैचारिक धरातल पर मोहभंग के राजनीतिक निहितार्थ को तीखे ढंग से व्यक्त करते हैं। इस काव्य संग्रह में ऐतिहासिक घटनाओं और चीख की यादों को इस प्रकार व्यवस्थित किया गया है कि अतीत वर्तमान में और वर्तमान अतीत में संक्रमित हो गया है-

"पीछे कुछ नहीं/ केवल स्मृतियां हैं/ मूर्ति से मूर्ति/

मनुष्य से मनुष्य/ कविता से कविता/

मोहनजोदड़ो से अब तक का/ सिलसिला है/

युद्ध की अटूट शृंखला है।"⁹

इस संग्रह में व्यंग्य का स्वर उठता तो इतिहास से है किंतु प्रश्नांकित करता है वर्तमान को। श्रीकांत वर्मा ने आज के त्रासद और भयावह राजनीति को इतिहास के संदर्भ से जोड़कर अधिक अर्थवान और मूल्यवान बनाया है। विश्वनाथ प्रसाद तिवारी लिखते हैं, "श्रीकांत वर्मा के मगध संग्रह की कविताओं की मनोभूमि गंभीर चिंतन की मनोभूमि है। शांत स्थिर। जैसे किसी ने काफी कुछ गंवाने के बाद आत्म मंथन किया हो। इन कविताओं में व्यंग्य है, विडंबना है, वक्रोक्ति है, मगर तेवर आक्रामक नहीं है। ऊपर की हलचल नहीं है, गहराई की शांति है, क्रांति का हुहुआता माहौल नहीं है, विनयशीलता है। इन कविताओं में पछतावा है, मगर शहादत, उत्सर्ग या आत्मपीड़न के अंदाज में नहीं। कवि प्रदर्शन नहीं करना चाहता, रचता है-

"चाहता तो बच सकता था/ मगर कैसे बच सकता था?

जो बचेगा कैसे रचेगा?/ पहले मैं झुलसा, फिर धधका,

चिटखने लगा/कर सकता था,

मगर कैसे कराह सकता था /जो कराहेगा कैसे निबाहेगा?"¹⁰

मगध काव्य संग्रह की हस्तक्षेप शीर्षक कविता में सत्ता की क्रूरता और उसके कारण पैदा होने वाले प्रतिरोध का सारगर्भित चित्रण किया गया है। व्यवस्था को जनोपयोगी और कल्याणकारी बनाने के लिए समय-समय पर उसमें हस्तक्षेप की आवश्यकता पड़ती है, अन्यथा उस पर निरंकुशता हावी होने लगती है। इस संग्रह में श्रीकांत वर्मा ऐसे तंत्र को विकसित करने पर जोर देते हैं जहां किसी प्रकार विरोध के लिए कोई गुंजाइश न हो। कवि सवाल खड़ा करता है कि जहां मुर्द का भी हस्तक्षेप करना संभव है उस समाज में जीता जागता मनुष्य क्यों मौन है?--

कोई छीकता नहीं/ इस डर से/

कि मगध की शांति/भंग ना हो जाए/

x x x x x x x x x

कोई चीखता तक नहीं/इस डर से,

कि मगध की व्यवस्था में,दखल न पड़ जाए

x x x x x x x x x

लोगों का क्या/ लोग तो यह भी कहते हैं/

मगध अब कहने को मगध है/

x x x x x x x x x

जब कोई नहीं करता/ तब नगर के
बीच से गुजरता हुआ/ मुर्दा/ यह प्रश्न कर
हस्तक्षेप करता है/ मनुष्य क्यों मरता है।¹¹

इस प्रकार श्रीकांत वर्मा ने अपनी कविताओं में एक सड़ी हुई व्यवस्था का केवल माखौल ही नहीं उड़ाया अपितु उसके स्थान पर एक जूझते हुए मनुष्य की अस्मिता को कई स्तरों पर खोजने की कोशिश की। निःसंदेह वे नई कविता की परिपक्व परिणति के कवि हैं। नई कविता में निहित आधुनिकता, मूल्यगत टकराव, और अनास्था की प्रवृत्तियों से उत्पन्न भयावह सच्चाइयों की जो परिणति हिंदी जगत में उत्पन्न हुई, श्रीकांत वर्मा उसके प्रखर प्रवक्ता हैं। सत्ता, राजनीति और स्वार्थ के संघर्ष में मनुष्य की आत्मा की खोज करती उनकी कविता चाखती है, प्रहार करती है और उन सभी काव्यात्मक स्थलों को चिन्हांकित करती है, जहां हलचलें शोर में परिवर्तित हो गई हैं। उनका इतिहास बोध इसीलिए गहरा है। श्रीकांत वर्मा के संबंध में अशोक वाजपेई की टिप्पणी अवलोकनीय है, "इस ऐतिहासिक काव्य यात्रा में माया दर्पण, जलसाघर, दिनारंभ और मगध काव्य संग्रहों पर श्रीकांत वर्मा को सारे शिखर पुरस्कार प्राप्त हुए हैं और अंतरराष्ट्रीय ख्याति हासिल हुई है। कविता को कवि के गहन ढंग से जीने का साक्ष्य होना चाहिए। कविता यदि जीने के कर्म को उसकी मानवीयता और गरिमा में शक्ति पूर्वक प्रस्तुत और परिभाषित नहीं करती तो उसका कौन सा कर्तव्य हो सकता है।¹²

निष्कर्ष:- उपर्युक्त विवरण के आलोक में कहा जा सकता है कि श्रीकांत वर्मा की कविता में विडंबना और आक्रोश केवल शैलीगत प्रयोग नहीं है, वे उनके संपूर्ण काव्यदर्शन के केंद्रीय तत्व हैं। उनकी कविता न केवल विचारधारा का प्रतिरोध रचती है बल्कि अपने भीतर गहरे अस्तित्ववादी संकट, प्रश्नाकुलता और शिकायत को भी समेट रही है। विशेष रूप से उनकी कविताओं में उपस्थित विडंबना, असंगति, द्वंद्व, क्रूर यथार्थ, राजनीतिक नैतिकता का हास और मनुष्य की आत्मिक पराजय एक ऐसी काव्य भूमि तैयार करते हैं जो कहीं भी मात्र भावुक न होकर तेज धार वाले बौद्धिक हस्तक्षेप की तरह प्रभाव छोड़ती है। उनकी कविता में व्यक्त आक्रोश मर्यादित, संयत, विवेक पूर्ण और गहन है। विडंबना उनकी अभिव्यक्ति का प्राकृतिक रूप है। यह कारण है कि विडंबना और आक्रोश के स्वरां में रचित श्रीकांत वर्मा के काव्य की प्रासंगिकता आज भी अपने समय की भांति ही विद्यमान है क्योंकि मनुष्य को अभी भी उसी इतिहास, उसी राजनीति, उसी भय और उसी आत्मिक कमजोरी का सामना करना पड़ रहा है और जब तक मनुष्य का यह संघर्ष रहेगा, श्रीकांत वर्मा की कविता हमारा पथ प्रशस्त करती रहेगी।

संदर्भ

1. भारत भूषण अग्रवाल, संग्रह, , पृष्ठ 66.
2. नामवर सिंह, कविता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. श्रीकांत वर्मा, रचनावली (संपादक), अरविन्द त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 458.
4. श्रीकांत वर्मा, प्रतिनिधि कविताएं, वह मेरी नियति थी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 53..
5. श्रीकांत वर्मा, माया दर्पण काव्य संग्रह, बुखार शीर्षक कविता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1992, पृष्ठ 124.
6. वही, पृष्ठ 6.
7. श्रीकांत वर्मा, जलसाघर काव्य संग्रह, युद्ध नायक शीर्षक कविता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1992, पृष्ठ 71.
8. वही, पृष्ठ 26 -27.
9. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, समकालीन हिंदी कविता, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 196
10. वही, पृष्ठ 206.
11. श्रीकांत वर्मा, मगध काव्य संग्रह, हस्तक्षेप शीर्षक कविता, पृष्ठ 148 -149.
12. अशोक वाजपेयी, फिलहाल, पृष्ठ 13.